International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 393-396

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 393-396
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-07-2020
Accepted: 20-08-2020

अर्चना कुन्तल
शोधच्छात्रा– संस्कृत विभागदिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
अर्चना कुन्तल
शोधच्छात्रा– संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

पाणिनीय लिङ्गानुशासन में लिङ्गनिर्धारण का व्यावहारिक पक्ष: एक अध्ययन

अर्चना कुन्तल

DOI: https://doi.org/ 10.22271/23947519.2020.v6.i5g.1201

प्रस्तावना

लिङ्गानुशासन शब्द दो पदों से निर्मित है लिङ्ग और अनुशासन – । शब्द 'लिङ्ग' 'लिगि चित्रीकरणेधातु ' 'लिङ्ग्यत्पदो लिङ्गम्' – से निष्पन्न होता है जिसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है । यहाँ पर चित्रीकरण का अर्थ निशान या चिह्न है। धातु से ल्युट् प्रत्यय करके सिद्ध 'शासुँ अनुशिष्टौ' शब्द अनु उपसर्ग पूर्वक 'अनुशासन' होता है, जिसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है अनुशिष्यन्ते संस्क्रियन्ते व्युत्पद्यन्ते शब्दाः अनेन इति' – अनुशासनम्। ' इस लिङ्ग शब्द को आचार्यों ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है – व्याकरणशास्त्र के अद्वितीय आचार्य पाणिनि भी लिङ्गानुशासन के विषय में स्पष्ट विधान करने में क्लिष्टता को प्रकट करते हुए कहते हैं – 'तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्' [1] अर्थात् व्यक्तिवचन (लिङ्ग-संख्या) का पूरा-पूरा शासन (विधान) नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह लौकिक व्यवहाराधीन है ।

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने भी' लिङ्गमशिष्यं लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य' [2] कहकर लिङ्गानुशासन की कठिनता को स्वीकार किया है ।

अधिकांश शब्दों का व्याकरणिक प्रविधियों से लिङ्ग निर्धारण करने के उपरान्त कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके लिङ्ग निर्धारण हेतु पाणिनीय लिङ्गानुशासन में व्यावहारिक प्रविधि का प्रयोग किया गया है,जिनका लिङ्ग निर्धारण व्याकरण के नियमों से हो पाना सम्भव नहीं उनका लिङ्ग निर्धारण लोक में प्रयुक्त भाषा ही लिङ्ग निर्धारण का आधार है, जिनका वर्गीकरण हम पाणिनीय व्याकरण में निम्न रूप में कर सकते हैं

1. समानार्थवाची शब्दों के आधार पर लिङ्गनिर्धारण प्रविधि

इस प्रविधि के अन्तर्गत ऐसे शब्दों का अध्ययन किया गया है, जिनका लिङ्गज्ञान उनके सभी समानार्थवाची अथवा पर्यायवाची शब्दों के आधार पर किया जा सकता है । वस्तुतः 'अन्यायश्चानकेशब्दत्वम्' इस न्याय के अनुसार परमार्थतः कोई शब्द किसी अन्य शब्द का पर्यायवाची नहीं हो सकता है । यथा – लता शब्द के विविध पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग लोक में देखा जाता है– लता, वल्लरी एवं वल्ली इत्यादि। प्रयुक्त लता के समानार्थक शब्द लता के ही पृथक्-पृथक् अर्थों के प्रत्यायक हैं न कि किसी एक ही अर्थ के । अर्थात् उनके प्रवृत्ति निमित्त पृथक्-पृथक् ही होते हैं ।

इस प्रकार वे कभी समान नहीं हो सकते, तदपि उन सभी गुणों का आश्रयभूत अर्थ एक ही है । समानता के कारण वे उपचार से परस्पर पर्यायवाची मान लिये गये हैं । इसी विधि के शब्दों का लिङ्गज्ञान इस सिद्धान्त के अन्तर्गत वैयाकरणों द्वारा किया गया है । इसी प्रविधि को हम समानार्थकता के आधार पर लिङ्गनिर्धारण का सिद्धान्त नाम से कह सकते हैं । ऐसे शब्दों के लिङ्गज्ञान का स्पष्टीकरण पाणिनि ने इस प्रकार किया है –

1 पा .अष्टा .-1.2.53 ।

2 महाभाष्य ।

स्त्रीलिङ्गाभिधानवाची शब्द

- भूमि आदि शब्द तथा इनके समानार्थवाची शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में जानना चाहिये।[3] यथा –

  भूमिवाची – इयं भूमिः, इयं भूः, इयं अचला, इयं धरणिः, इयं क्षोणिः, इयं क्षितिः।

  विद्युद्वाची – इयं विद्युत्, इयं तडित्, इयं सौदामिनी, इयं चञ्चला, इयं चपला।

  लतावाची – इयं लता, इयं वल्ली, इयं वल्लरी, इयं व्रततिः।

  वनितावाची – इयं वनिताः स्त्री, इयं योषित्, इयं योषा, इयं नारी।

  सरिद्वाची – इयं सरित् नदी, इयं तरङ्गिणी, इयं शैवलिनी, इयं तटिनी। किन्तु सरिद्वाची यादस् शब्द का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में होता है[4], यथा– इदं यादः।
- तारादि [5] तथा इनके पर्यायवाची शब्द भी स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग किये जाते हैं।[6] यथा –

  तारावाची – इयं तारा, इयं तारका, इयं उडु।

  धारावाची – इयं धारा।

  ज्योत्स्नावाची – इयं ज्योत्स्ना, इयं चन्द्रिका, इयं कौमुदी।

पुंल्लिङ्गाभिधानवाची शब्द

- देवादि पठित चौदह शब्द एवं इनके अभिधानवाची सभी शब्द पुंल्लिङ्ग में प्रयोग किये जाते हैं।[7] यथा –

  देववाची – अयं देवाः, अयं सुराः, अयं अमरा, अयं निर्जरा, अयं विबुधाः। इसी का अपवाद देवतावाची द्यौ शब्द का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में किया गया है।[8] यथा – इयं द्यौः।

  असुरवाची – अयं असुरः, अयं दैत्यः, अयं दानवः, अयं दितिसुतः, अयं पूर्वदेवः।

  आत्मवाची – अयं आत्मा, अयं क्षेत्रज्ञः, अयं पुरुषः, अयं विप्रः, अयं प्रजापतिः।

  स्वर्गवाची – अयं स्वर्गः, अयं नाकः, अयं त्रिदिवः। किन्तु स्वर्ग के ही वाची त्रिविष्टप एवं त्रिभुवन शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग किये जाते हैं।[9] यथा – इदं त्रिविष्टपं स्वर्गः, त्रिभुवनम्। ये उक्त सूत्र के अपवाद हैं।

  गिरिवाची – अयं गिरिः, अयं पर्वतः, अयम् अद्रिः, अयं ग्रावाचलः, अयं शैलः।

  समुद्रवाची – अयं समुद्रः, अयम् अब्धिः, अयं पारावारः, अयं सिन्धुः।

  नखवाची –अयं नखः, अयं कररूहः, अयं पुनर्भवः।

  केशवाची – अयं केशः, अयं शिरोरूहः, अयं चिकुरः, अयं कुन्तलः, अयं कचः।

  दन्तवाची – अयं दन्तः, अयं दशनः, अयं रदनः।

  स्तनवाची – अयं स्तनः, अयं कुचः।

  भुजवाची – अयं भुजः, अयं दोः, अयं प्रवेष्टः।

  कण्ठवाची –अयं कण्ठः, अयं गलः, अयं शिरोधिः, अयं कंधरः।

  खड्गवाची – अयं खड्गः, अयं करवालः, अयं चन्द्रहासः, अयं कृपाणः, अयं मण्डलाग्रः।

  शरवाची – अयं शरः, अयं मार्गणः। किन्तु शरवाची बाण और काण्ड शब्दों का प्रयोग पुंन्नपुंसकलिङ्ग दोनों में किया जाता है[10], यथा– अयम् बाणः, इदं बाणम्। अयं काण्डः, इदं काण्डम्।

  पङ्कवाची– अयं पङ्कः, अयं कर्दमः।
- क्रतु आदि शब्द एवं इन शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग पुंल्लिङ्ग में होता है।[11] यथा–क्रतुवाची – अयं क्रतुः, अयं अध्वरः।

  पुरुषवाची –अयं पुरुषः, अयं नरः।

  कपोलवाची – अयं कपोलः, अयं दण्डः।

  गुल्फवाची – अयं गुल्फः, अयं प्रपदः।

  मेघवाची – अयं मेघः, अयं नीरदः। किन्तु मेघ के वाची अभ्र शब्द का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में किया गया है।[12] यथा – इदम् अभ्रम्।
- रश्मि आदि पठित शब्द एवं इनके अभिधानवाची शब्दों का प्रयोग पुंल्लिङ्ग में किया गया है।[13] यथा –

  रश्मिवाची – अयं रश्मिः, अयं मयूखः। किन्तु रश्मिवाची दीधिति शब्द का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में होता है।[14] यथा – इयं दीधितिः, इयं रश्मिः।

  दिवसवाची – अयं दिवसः, अयं घस्रः। इसके अपवाद भी प्रयोग में देखे जाते हैं। यथा- दिवसवाची दिन और अहन् शब्दों का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में किया गया है।[15] यथा – इदं दिनं दिवसः। इदम् अहः दिवसः।
- मान (परिमाण) शब्द के समानार्थवाची शब्दों का प्रयोग पुंल्लिङ्ग में होता है।[16] यथा– अयं कुडवः। अयं प्रस्थः। जबकि परिमाणवाची द्रोण और आढक शब्दों का प्रयोग पुंन्नपुंसकलिङ्ग में होता है।[17] यथा – इदं द्रोणम्। अयं द्रोणः। इदम् आढकम्। अयम् आढकः। वहीं परिमाणवाची खारी और मानिका परिमाणवाची शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में किया जाता है।[18] यथा – इयं खारी। इयं मानिका (8 पल)।

नपुंसकलिङ्गाभिधानवाची शब्द

- मुख– नयन– लोह– वन– मांस– रुधिर– कार्मुक– विवर– जल– हल– धन एवम् अन्न शब्द एवं इनके अभिधानवाची शब्दों का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में होता है।[19]
- बल,कुसुम,शुल्व,पत्तन एवं रणवाची पठित शब्द एवं इनके अभिधानवाची शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग किये जाते है।[20]

---

3 भुमिविद्युतत्सरिल्लता.., पा. लि. – 18।

4 यादो नपुंसकम्, वही – 19।

5 आदि शब्द यहाँ प्रकारवाची है।

6 ताराधाराज्योत्स्ना.., पा. लि. – 33।

7 देवासुरात्मस्वर्ग.., वही – 43।

8 द्यौः स्त्रियाम्, पा. लि. – 45।

9 त्रिविष्टपपत्रिभुवने, पा.लि. – 44।

10 बाणकाण्डौ, पा.लि.–47।

11 क्रतुपुरुषकपोल.., वही – 49।

12 अभ्रं नपुंसकम्, पा. लि. – 50।

13 रश्मिदिवसाणिधानानि, वही – 100।

14 दीधितिः स्त्रियाम्, वही – 101।

15 दिनाऽहनि नपुंसके, वही – 102।

16 मानाभिधानानि, पा.लि. – 103।

17 द्रोणाढकौ.., वही – 104।

18 खारीमानिके स्त्रियां च, वही – 105।

19 मुखनयनलोहवन.., वही – 139।

20 बलकुसुमशुल्व.., पा. लि. – 159।

किन्तु कुसुमवाची पद्म, कमल एवं उत्पल शब्दों का प्रयोग पुंन्नपुंसकलिङ्ग दोनों में किया जाता है ।[21] इसी प्रकार रणवाची आहव और सङ्ग्राम शब्दों का प्रयोग पुंल्लिङ्ग में किया जाता है । [22]जबकि रणवाची आजि शब्द का प्रयोग प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में होता है ।[23] यथा – इयम् आजि रणम् ।

2. शब्दपरिगणन के आधार पर लिङ्गनिर्धारण प्रविधि

यह सिद्धान्त भी लिङ्गनिर्धारण में एक सहायक पक्ष है । लिङ्गानुशासन में प्रतिपदपाठ के रूप में पठित शब्दों का लिङ्ग वही रहता है जिसमें वे पढे गये हैं, किन्तु समस्तपद (समासान्त होने पर) में आने पर तथा अर्थ विशेष में शब्द के पठित होने पर लिङ्ग परिवर्तित हो सकता है । इस प्रकरण के अन्तर्गत परिगणित अधिकांश शब्द ऐसे हैं जिनका लिङ्गनिर्धारण पूर्व में व्याकरणिक विधियों से कर दिया गया है । पुनः अपवाद स्वरूप उन्हीं शब्दों का लोक व्यवहार के आधार पर अन्य लिङ्ग में भी विधान किया गया है । इस प्रकार के विभिन्न शब्द पाणिनीय व्याकरण में निम्न प्रकार हैं –

स्त्रीलिङ्ग में परिगणित शब्द

- विंशति शब्द से लेकर नवति पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग होते हैं ।[24] यथा– इयं विंशतिः, इयं नवतिः ।
- भास्, स्रुच्, स्रज्, दिश्, उष्णिषक् तथा उपानह् ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग होते हैं ।[25] यथा– इयं भाः, इयं स्रुक्, इयं स्रक्, इयं दिक्, इयं उष्णिक्, इयं उपानत् ।
- कुछ हलन्त शब्दों का परिगणन आचार्य ने इस प्रकरण में इस प्रकार किया है– प्रावृष, विप्रुष, रुष, तृष्, विष, त्विष्, प्रतिपपदत्, आपत्, विपदत्, सम्पत्, संसत्, परिषत्, उषस्, संवित्, क्षुत्, पुत्, मुत्, समित्, आशिष, धुर्, पुर्, गिर्, द्वार्, अप्, सुमनस्, स्रक्, त्वक, ज्योक्, वाक्, स्फिक् इत्यादि शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में किया जाता है[26]
- निम्न आकारान्त शब्दों का परिगणन आ. पा. ने स्त्रीलिङ्ग में किया है[27] , यथा– समा, सिकता, वर्षा, सीमा, सम्बध्या एवं शलाका शब्द स्त्रीलिङ्ग में किया जाता है।[28]
- इसी प्रकार इकारान्त दर्वि विदि, वेदिः, खनिः, शनिः, अश्नि, वेशि, कृषि, ओषधि, कटि, अङ्गुलि, तिथि, नाडि, रुचि, वीचि, नालिः, धुलिः, किकिः, केलिः, छविः, रात्रिः, शष्कुलिः, राजि, कुटि, अवन्ति, वर्ति, भ्रकुटि, त्रुटि, वलि, पङ्क्ति, तृटि, चुल्लि, वेणि इत्यादि इकारान्त शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में किया गया है । [29]
- यवागू, नौ, खारी इत्यादि शब्दों का परिगणन स्त्रीलिङ्ग में किया गया है ।[30]
- संख्यावाची लक्ष तथा कोटि शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग होते हैं । [31] यथा – इयं लक्षा । इयं कोटिः ।

पुंल्लिङ्ग में परिगणित शब्द

- भय, लिङ्ग, तथा पद शब्दों का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में किया जाता है ।[32] यथा – इदं भयम्, इदं लिङ्गम्, इदं पदम् । ये शब्द अच्-प्रत्ययान्त हैं अतः 'घाजन्तश्च' से पुंल्लिङ्ग प्राप्त था, किन्तु प्रकृत सूत्र द्वारा नपुंसकत्व कहा गया है ।
- दारा, अक्षत तथा लाजा शब्दों का परिगणन पुंल्लिङ्ग में किया गया है । ये शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं ।[33]
- नाडी, अप तथा जन इन शब्दों के उपपद रहते व्रण, अङ्ग तथा पद शब्द पुंल्लिङ्ग में प्रयोग किये जाते हैं ।[34]
- निम्न हलन्त शब्दों का परिगणन पुंल्लिङ्ग में किया गया है । यथा – मरुत्, गरुत्, उत्तरत् एवं ऋत्विक् शब्द पुंल्लिङ्ग में प्रयुक्त हैं । [35]
- निम्न शब्द पुंल्लिङ्ग में परिगणित हैं । यथा-

  जकारान्त –ध्वजः, गजः, मुञ्जः, पुञ्जः । डकारान्त –षण्डः, मण्डः, करण्डः, भरण्डः, वरण्डः, तुण्डः, गण्डः, मुण्डः, पाषाण्डः, वरण्डः, शिखण्डः ।

  तकारान्त – हस्त, कुन्त, अन्त, वात, व्रात, दूत, धूर्त, सूत, चूत, मुहुर्त्तादि एवं ह्रद, कन्द, बुदबुद शब्दादि ।

  शकारान्त – वेश, अंश, पुरोडाश, वंशादि शब्दों का परिगणन पुंल्लिङ्ग में किया गया है ।[36]

  इकारान्त ऋषि इत्यादि शब्दों का परिगणन पुंल्लिङ्ग में प्राप्त होता है।[37]

  अर्घ आदि अनेक शब्दों का प्रयोग पुंल्लिङ्ग में किया जाता है।[38]

  पल्वल आदि शब्दों का संकलन भी इसी पुंल्लिङ्ग प्रकरण के अन्तर्गत किया गया है ।[39]

नपुंसकलिङ्ग में परिगणित शब्द

- संख्यावाचक शतादि शब्दों का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में होता है । [40] यथा– इदं शतं, इदं सहस्रम्।
- दधि इत्यादि सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग होते हैं ।[41]

स्त्रीपुंल्लिङ्ग में परिगणित शब्द

- विभिन्न इकारान्त शब्दों का परिगणन इस प्रकरण के अन्तर्गत किया है । यथा– गो, मणि, यष्टि, मुष्टि, पाटलि, वस्ति, शाल्मलि, त्रुटि, मसि, मरीच्यादि शब्दों का प्रयोग स्त्री तथा पुंल्लिङ्ग दोनों लिङ्गों में किया जाता है । [42]

---

21 पद्मकमलोत्पलानि, वही – 161 ।

22 आहवसंग्रामौ पुंसि, पा. लि. – 162 ।

23 आजिः स्त्रियामेव, वही – 163 ।

24 विंशत्यादिरानवतेः, पा.लि.– 13 ।

25 भास्स्रुक्स्रग्दिगुगुष्णिगुपानहः, वही – 20 ।

26 प्रावृड्विप्रुड्दृतृड्विट्त्विषः, वही. – 23,
प्रतिपदापद्विपत्सम्पच्छरत्संसत्परिषदुषःसंवित्क्षुत्पुन्मुत्समिधः, वही–27, आशीर्धूः पूर्गीर्द्वारः,वही–28 ।

27 पा.लि.–२९,३१,३४।

28 अप्सुमनस्ससमासिकतावर्षाणां, वही – 29, तृटिसीमा.., वही– 31, शलाका स्त्रियां नित्यम्, वही–34 ।

29 दर्विविदिवेदिखनिशान्य.., वही – 24, तिथिनाडिरुचिवीचिनालि.., वही–25, शष्कुलिराजिकुट्यवन्ति.., वही–26, चुल्लिवेणिखार्यश्च, वही–32 ।

30 स्रक्त्वग्ज्योग्वाग्यवागूनौस्फिजः, वही – 30 ।

31 लक्षाकोटि स्त्रियाम्, पा.लि. – 148 ।

32 भयलिङ्गपदानि नपुंसके, वही – 38 ।

33 दाराऽक्षतलाजाऽसूनां बहुत्वं च, वही – 106 ।

34 नाड्यपजनोपपदानि.., वही – 107 ।

35 मरुद्गरुदुत्तरदृत्विजः, पा. लि. – 108 ।

36 ध्वजगजमुञ्जपुञ्जाः, वही – 110, षण्डमण्डकरण्डभरण्डवरण्ड..,वही–110, हस्तकुन्ताऽन्तवातव्रातदूत.., वही–111, ह्रदकन्दकुन्द.., वेशाशंपुरोडाशाः, वही–113 ।

37 ऋषिराशिदृतिग्रन्थि.., पा.लि. – 109, सारथ्यतिथिकुक्षि..,वही–117 ।

38 अर्घपथिमथ्यृभुक्षि.., वही – 115 ।

39 पल्लवपल्वलकफरेफ.., वही – 116 ।

40 शतादिः सङ्ख्या, पा. लि. – 146 ।

41 वियज्जगत्सकृत्शकन्पृषत्.., नवनीतावतानानृतामृतनिमित्तवित्त..,
धान्याज्यसस्यरूप्यकुप्य.., द्वन्दबर्हदुःखबडिशपच्छ.., वही – 166,167,170,171 ।

42 गोमणियष्टिमुष्टिपाटलिवस्ति.., पा.लि. – 174 ।

- कुछ उकारान्त शब्दों का प्रयोग इस समूह के अन्तर्गत किया जाता है, यथा- मृत्यु, सीधु, कर्कन्धु, किष्कु, कण्डु तथा रेणु इन परिगणित शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग एवं पुंल्लिङ्ग दोनों लिङ्गों में होता है ।[43]

पुंन्नपुंसकलिङ्ग में परिगणित शब्द

- घृत, भूत, मुस्त, श्वेलित, ऐरावत, पुस्तक, बुस्त, शृङ्ग, अघ, निदाघ, उद्यम, शल्य, दृढ, व्रज, कुञ्ज, कुथ, कूर्च, प्रस्थ, दर्प, अर्भ, अर्धर्च, दर्भ, पुच्छ, कबन्ध, औषध, आयुध, अन्त, दण्ड, मण्ड, खण्ड, शव, सैन्धव, पार्श्व, आकाश, कुश, काश, अंकुश, कुलिश, गृह, मेह, देह, पट्ट, पटह, अष्टापद्, अम्बुद एवं ककुद ये परिगणित सभी शब्दों का प्रयोग पुंन्नपुंसकलिङ्ग में होता है ।[44]

उपसंहार

संस्कृत भाषा में लिङ्ग ज्ञान अत्यधिक अनिवार्य है। संभवतः इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये आचार्य पाणिनि ने अष्टाध्यायी सूत्रपाठ से पृथक् लिङ्गानुशासन का पाठ किया है। व्याकरणशास्त्र की कृत्स्नता के लिये लिङ्गानुशासन का पाठ अत्यधिक अपेक्षित भी था । वस्तुतः व्याकरण शास्त्र की रचना लोक व्यवहार को आधार मानकर ही की गयी है । सर्वप्रथम लोक में शब्दों का प्रयोग देखा जाता है, तत्पश्चात् व्याकरण द्वारा उन प्रयुक्त शब्दों को सुव्यवस्थित एवं परिष्कृत किया जाता है । इसी आधार पर शब्दों का लिङ्ग निर्धारण भी लोक पर ही आश्रित है – लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य । इसी का अनुसरण करते हुये वस्तुतः पाणिनि ने भी शब्दों के लिङ्ग निर्धारण में लोक को ही प्रमाण माना है, यहां उपरोक्त शब्दों के लिङ्ग निर्धारण में किसी भी प्रकार के व्याकरण नियमों का प्रयोग करने में पाणिनि भी कहीं न कहीं असमर्थ ही प्रतीत होते हैं। इस वर्गीकरण के अन्तर्गत हम स्पष्ट देख सकतें हैं कि लिङ्ग निर्धारण में व्याकरण प्रविधि के अतिरिक्त जिस प्रविधि को पाणिनि ने अपनाया है वह है लोक व्यवहार, लोक व्यवहार में भी एक नियम दृष्टिगोचर होता है और वह है समानार्थवाची शब्दों के आधार पर लिङ्गनिर्धारण एवं शब्दपरिगणन के आधार पर लिङ्गनिर्धारण । वस्तुतः लिङ्ग निर्धारण एक ऐसा उलझा हुआ विषय प्रतीत होता है, जिसका निराकरण व्याकरण एवं लोक दोनों को आधार मानकर ही कुछ हद तक स्पष्ट समझा जा सकता है,किसी एक आधार पर पूर्णतया स्पष्ट कर पाना सर्वथा असम्भव ही है।

इस प्रकार लोक व्यवहार लिङ्ग के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लिङ्गनिर्धारण और भाषा में लिङ्गों से सम्बंधित सूक्ष्म परिधियों एवं प्रवृत्तियों का समुचित ज्ञान जटिल समस्याओं में से आज भी एक है।

सन्दर्भग्रन्थ– सूची

1. अवस्थी ,(.सम्पा) रुद्रप्रसाद ,*पाणिनीय शिक्षा*, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।, 1972.
2. ईश्वरचन्द्र) व्या(., *पाणिनीयं लिङ्गानुशासनम्*) आशुबोधिनी संस्कृत-हिन्दी टीका सहित(, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।, 2004.
3. उदयभानु, *पाणिनीय लिङ्गानुशासन के आधार पर लिङ्ग निर्धारण के सिद्धान्त*, ल.शो.प्र., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली । , .1995
4. उदयभानु, *संस्कृत व्याकरणों में उपलब्ध लिङ्गानुशासनों का तुलनात्मक अध्ययन,* शो .प्र., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।, 2002.
5. कुन्तल अर्चना, *पाणिनीय तथा वामनीय लिङ्गानुशासनों में लिङ्ग निर्धारण की व्याकरणिक प्रविधियां,* ल.शो.प्र., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।, 2017.
6. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त) सम्पा(., *धातुपाठः*, श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत ।, 1974.
7. जिज्ञासु ,ब्रह्मदत्त ,*काशिकावृत्ति*, चौखम्बा संस्कृत सीरीज , ,वाराणसी । 1952.
8. झा, नरेश) व्या .एवं सम्पा(., *लिङ्गानुशासनम्*, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।.2008 ,
9. मीमांसक, युधिष्ठिर, सं .*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास* (*भाग*-2), रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत ।.2030 ,
10. वेदव्रत) सम्पा(., *व्याकरणमहाभाष्यम्) भाग(15-*, हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्झर, रोहतक ।.1962 ,
11. शर्मा, देवीदत्त, *संस्कृत का ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक परिचय*, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमीहरियाणा , ।, 1974.
12. सरस्वती, स्वामी दयानन्द) सम्पा(., *लिङ्गानुशासन) व्याख्या सहित(*, अजमेर।.70-1969 ,
13. Cardona, George, Panini a survey of Research, Motilal Banarsidas, Delhi 1976.
14. Cardona, George, Recent Research in Paninian studies, Motilal Banarsidas, Delhi 1999.
15. Karl H, Potter, Encyclopaedia of Indian Philosophies (vol-v), Motilal Banarsidas, Delhi 1990.
16. Pathak & Chitrao (comp.), Word Index to Panini-Sutra-Path and Parisistas, B.O.R.I., Poona 1985.
17. आप्टे, संस्कृत-हिन्दी कोश, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी ।.2009 ,
18. तारानाथतर्कवा ,चस्पति ,*वाचस्पत्यम्,* काव्यप्रकाश प्रेस , ,कलकत्ता। 1812-1885.
19. त्रिपाठी, शम्भुनाथ (सम्पा(., *नाममाला,* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2013.
20. कुन्तल अर्चना, *पाणिनीय व्याकरण शास्त्र में लिङ्ग निर्धारण की संकल्पना, शब्दार्णव,* international refereed journal of multidisciplinary research. SN.7, part-2 january-june, 2018. Samnvay Foundation Mujaffarpur, Bihar. ISSN: 2395-5104.
21. कुन्तल अर्चना, *वामनीय लिङ्गानुशासन में लिङ्ग निर्धारण की व्याकरणिक प्रविधियां: एक विमर्श,* वेदांजलि, international refereed journal of multidisciplinary research, page no. 107-114, SN.9, part-4 january-june, Vaidik educational research society, Varanasi 2018. ISSN: 2349-364X.

[43] मृत्युसीधुकर्कन्धुकिष्कु.., वही – 175 ।

[44] घृतभूतमुस्तश्वेलितैरावत.., शृङ्गाघनिदाघोद्यम.., वज्रकुञ्जकुथकूर्च.., कबन्धौषधायुधान्ताः, दण्डमण्डखण्डशवसैन्धव, गृहमेहदेहपट्टपट.., पा. लि. – 179,180,181,182,183,184 ।